Research Paper
E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ में वर्तमान भारत की भूमिका एवं कार्य

रवि कुमार शोधार्थी (भूगोल), टांटिया विश्वविद्यालय, रीको, श्रीगंगानगर.

ABSTRACT:

ग्लोबल साउथ में मुख्य रूप से दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, एशिया आदि में स्थित देश आते हैं जिन्हें अक्सर विकासशील अथवा कम विकसित या अविकसित देश के रूप में जाना जाता है। आमतौर पर ग्लोबल नॉर्थ के धनी देशों की तुलना में इन देशों में उच्च स्तर की गरीबी, आय की असमानता, कठिन व निम्न जीवन परिस्थितियां, अशिक्षा आदि चुनौतियां विधमान हैं। ग्लोबल साउथ शब्द को पहली बार वर्ष 1969 में राजनीतिक कार्यकर्त्ता कार्ल ओग्लेसबी द्वारा दिया गया था। स्वतंत्रता के बाद से 'ग्लोबल साउथ' भारत की विदेश नीति की एक प्रमुख विशेषता रही है। भारत ने शीत युद्ध के दौरान किसी भी गठबंधन में शामिल हुए बिना विकासशील देशों की स्वायत्तता के लिए आवाज़ उठाई और NAM के गठन में प्रमुख भूमिका निभाई। भारत ने IMF और विश्व बैंक जैसी अन्य विशिष्ट संस्थाओं पर संयुक्त राष्ट्र की सर्वोच्चता के लिए तर्क दिया।भारत विकसित देशों के साथ बातचीत और 21 वीं सदी के लिए एक नई न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था बनाने में नेतृत्व की भूमिका निभा रहे हैं। भारत की राजनीतिक, जनसांख्यिकीय और आर्थिक विशेषताएं ग्लोबल साउथ की सामूहिक कूटनीति में नेतृत्व की भूमिका सुनिश्चित करने के लिए उपयोगी हैं। भारत के सामने प्रमुख चुनौतियां विभिन्न तृतीय विश्व संगठनों के बीच सहयोग सुनिश्चित करना तथा अन्य तृतीय विश्व देशों के बीच इस पर विश्वास बनाए रखना है।

KEYWORDS:

ग्लोबल साउथ, ग्लोबल नॉर्थ, शीत युद्ध, कूटनीति, विकासशील देश ।

वर्तमान विश्व में मोटे तौर पर दो आर्थिक दुनियाए हैं जो पूरे विश्व को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ:

ग्लोबल नॉर्थ में दुनिया के विकसित देश जो यूरोप, उत्तरी अमेरिका आदि में स्थित है तथा यह देश आर्थिक रुप से समृद्ध, तकनीकी रूप से उन्नत, स्थिर जनसंख्या वृद्धि, राजनीतिक रूप से स्थिर व वृद्ध है।

ग्लोबल साउथ में मुख्य रूप से दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, एशिया आदि में स्थित देश जिन्हें अक्सर विकासशील अथवा कम विकसित या अविकसित देशों के रूप में जाना जाता है। ग्लोबल नॉर्थ के धनी देशों की तुलना में इन देशों में उच्च स्तर की गरीबी, आय की असमानता, कठिन व निम्न जीवन परिस्थितियां, अशिक्षा आदि चुनौतियां विधमान हैं। ग्लोबल साउथ के देशों की जनसंख्या वृद्धि बहुत अधिक है तथा अधिकांश जनसंख्या कृषि और प्राथमिक क्रियाओं पर पर आधारित है और आर्थिक व राजनीतिक रूप से वैश्विक उत्तर या ग्लोबल साउथ पर निर्भर है।

ग्लोबल साउथ शब्द का विकास: ग्लोबल साउथ शब्द को पहली बार वर्ष **1969** में राजनीतिक कार्यकर्त्ता कार्ल ओग्लेसबी द्वारा दिया गया था। "ग्लोबल साउथ" शब्द का प्रयोग प्रायः उपनिवेशवाद की ऐतिहासिक विरासत और पूर्व उपनिवेशित देशों एवं विकसित पश्चिमी देशों के बीच आर्थिक असमानताओं को उजागर करने के लिये किया जाता है। ग्लोबल साउथ के ज़्यादातर देशों का इतिहास उपनिवेशवाद का रहा है। इस क्षेत्र का अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कम प्रतिनिधित्व रहा है।

G-77 का गठन: वर्ष 1964 में 77 देशों का समूह (G-77) तब अस्तित्व में आया जब इन देशों ने जिनेवा में व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCTAD) के पहले सत्र के दौरान एक संयुक्त घोषणा पर हस्ताक्षर किये। G-77 उस समय विकासशील देशों का सबसे बड़ा अंतर-सरकारी संगठन बन गया। विकासशील देशों के आर्थिक हितों को बढ़ावा देने और संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर चर्चा करने की उनकी क्षमता में सुधार करने के लिये G-77 बनाया गया था।

UNOSSC: दक्षिण-दक्षिण सहयोग के लिये संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (UNOSSC) की स्थापना वर्ष 1974 में की गई थी। इसकी भूमिका G-77 के सहयोग से ग्लोबल साउथ के देशों और विकसित देशों या बहुपक्षीय एजेंसियों के बीच सहयोग का समन्वय करना है।

ग्लोबल साउथ की मांग:

वैश्विक स्तर पर आनुपातिक मत: ग्लोबल साउथ में बड़ी आबादी वाले देश शामिल हैं, तथा इन देशों में रहने वाली वैश्विक आबादी का तीन-चौथाई हिस्सा होने के कारण उनका तर्क है कि वैश्विक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में इनका आनुपातिक और सार्थक मत होना चाहिये।

न्यायसंगत प्रतिनिधित्व: वैश्विक शासन का वर्तमान मॉडल विश्व की जनसांख्यिकीय और आर्थिक वास्तविकताओं को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं करता तथा न्यायसंगत प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिये बदलाव की मांग करता है कि ग्लोबल साउथ के विचार सुने और माने जाएँ।

वैश्विक राजनीति में ग्लोबल साउथ का प्रभाव:

ग्लोबल साउथ को प्राथमिकता देना: भारत की G20 की अध्यक्षता ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं से प्रेरित थी। यह उन मुद्दों और चिंताओं को दूर करने की आवश्यकता के विषय में बढ़ती जागरूकता का सुझाव देता है जो विशेष रूप से ग्लोबल साउथ के विकासशील देशों के लिये प्रासंगिक हैं।

ग्लोबल साउथ नेतृत्व: इंडोनेशिया, भारत, ब्राज़ील और दक्षिण अफ्रीका जैसे विकासशील देश निरंतर G20 शिखर सम्मेलन की मेज़बानी कर रहे हैं, वैश्विक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में ग्लोबल साउथ के अधिक नेतृत्व तथा प्रभाव को इंगित करता है। ये देश विश्व की आबादी और अर्थव्यवस्थाओं के एक महत्त्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं।

विकासशील विश्व का बढ़ता प्रभाव: यह G20, BRICS, शंघाई सहयोग संगठन (SCO), क्वाड, हिंद-प्रशांत आर्थिक ढाँचा (Indo-Pacific Economic Framework- IPEF) और अन्य वैश्विक संगठनों की भागीदारी के माध्यम से स्पष्ट है, जो निर्णय लेने की प्रक्रिया में ग्लोबल साउथ में देशों से सक्रिय रूप से भागीदारी चाहते हैं।

वैश्विक दक्षिण & भारत: वर्ष 2023 में भारत के प्रधानमंत्री ने "वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ" पर एक आभासी शिखर सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें लगभग 125 देश शामिल हुए। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य क्षेत्र के लिये प्राथमिकताओं को निर्धारित करने हेतु ग्लोबल साउथ के देशों की राय और इनपुट प्राप्त करना था। भारत ने 12-13 जनवरी 2023 को प्रथम वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट (VOGSS) और 17 नवंबर 2023 को द्वितीय वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट की मेजबानी की थी। भारत वैश्विक दक्षिण देशों के लिए एक वैकल्पिक विकास पथ प्रस्तुत करता है। स्थिरता, स्वास्थ्य सुरक्षा और वित्तीय समावेशन जैसे क्षेत्रों के लिए नीति निर्माण पर अनुभव और अंतर्दृष्टि साझा करके, भारत अन्य विकासशील देशों को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है।

वैश्विक दक्षिण में भारत की उभरती भूमिका

स्वतंत्रता के बाद से ग्लोबल साउथ' भारत की विदेश नीति की एक प्रमुख विशेषता रही है। भारत ने शीत युद्ध के दौरान किसी भी गठबंधन में शामिल हुए बिना विकासशील देशों की

स्वायत्तता के लिए आवाज़ उठाई और NAM के गठन में प्रमुख भूमिका निभाई। भारत ने IMF और विश्व बैंक जैसी अन्य विशिष्ट संस्थाओं पर संयुक्त राष्ट्र की सर्वोच्चता के लिए तर्क दिया। भारत अपने शुरुआती चरण से ही IMF, विश्व बैंक और GATT का सदस्य था। ग्लोबल साउथ के आर्थिक विकास के लिए UNCTAD और G-77 के पीछे भारत प्रमुख शक्ति था। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भारत की आर्थिक विदेश नीति का विभिन्न स्तरों पर विश्लेषण किया जा सकता है। शीत युद्ध की समाप्ति और भारत की नई उदार आर्थिक नीति ने भारत की अर्थव्यवस्था में बड़ा बदलाव और तेज़ विकास किया है। सबसे पहले, इसने प्रमुख शक्तियों के साथ संबंधों को बदल दिया। भारत बहु-संरेखण नीति की ओर बढ़ा।

भारत ने अमेरिका, ब्रिटेन, चीन और जापान सहित ग्लोबल नॉर्थ देशों के साथ अपने संबंधों को बढ़ाया। भारत की लुक ईस्ट नीति ने पूर्वी एशियाई देशों और आसियान के साथ बेहतर संबंध बनाए और इससे व्यापक एशियाई एकजुटता को बढ़ावा मिला। भारत ने 1985 में गठित सार्क के माध्यम से पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधों को बेहतर बनाया। अन्य क्षेत्रीय आर्थिक संगठन जैसे बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक), मेकांग-गंगा सहयोग (एमजीसी) और हिंद महासागर क्षेत्रीय सहयोग संघ (आईओआर-एआरसी) ने भी पड़ोसी देशों के साथ बेहतर आर्थिक और व्यापारिक संबंध बनाने और उनके बीच प्रभाव बढ़ाने में मदद की है। भारत की विदेशी सहायता का बड़ा हिस्सा भी पड़ोसी देशों में जाता है।

भूटान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका और अफ़गानिस्तान भारत की विदेशी सहायता के प्रमुख प्राप्तकर्ता हैं। चौथा, BASIC, IBSA और BRICS जैसे संगठनों के ज़रिए अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के साथ संबंधों में सुधार हुआ है, जिसमें दक्षिण अफ्रीका और ब्राज़ील शामिल हैं।

पिछले दशक में अफ्रीकी और अन्य कम विकसित देशों में भारत का एफडीआई तेजी से बढ़ा है। भारत वैश्विक उत्तर और दक्षिण के बीच अपने प्रभाव, बढ़ती अर्थव्यवस्था और बढ़ते मध्यम वर्ग और पेशेवरों के लाभ और वैश्विक दक्षिण और उत्तर के बीच बेहतर संवाद के लिए अपने लोकतांत्रिक और उदार राजनीतिक वातावरण का उपयोग कर सकता है। भारत की अर्थव्यवस्था का आने वाले संमय में विश्व अर्थव्यवस्था में प्रमुख स्थान होगा और नई आर्थिक व्यवस्था बनाने में प्रभाव डालेगी। नए आर्थिक माहोल में भारत जिम्मेदारी ग्लोबल साउथ के बेहतर उपचार और एक NIEO बनाने के लिए कार्य करना है।

भारत के लिए वैश्विक दक्षिण का महत्व

अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव: वैश्विक दक्षिण भारत के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव और उसके आर्थिक परिवर्तन और विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है।

रणनीतिक विचार: वैश्विक दक्षिण के साथ संबंध भारत की "बहुदिशात्मक संरेखण" रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे चीन के प्रभाव को कम करने में भी मदद मिलती है।

आर्थिक विकास: वैश्विक दक्षिण प्रचुर संसाधन उपलब्ध करा सकता है तथा भारतीय उत्पादों के निर्यात के लिए विशाल बाजार उपलब्ध करा सकता है।

भारत द्वारा समय को वैश्विक दक्षिण की आवाज के रूप में स्थापित करने के लिए किए जाने वाले कार्य

- कनेक्टिविटी और आर्थिक अंतर-संबंधों को बढ़ाना: स्वास्थ्य, आवास, पर्यावरण और शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे के विकास से लेकर समुदाय से संबंधित परियोजनाओं को शुरू करके।
- वैश्विक जलवायु एजेंडा का नेतृत्व करना: अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) और आपदा प्रतिरोधक गठबंधन (सीडीआरआई) का समर्थन करना, साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों (सीबीडीआर) का समर्थन करना
- बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार: जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का विस्तार करने की मांग, अफ्रीकी संघ को जी-20 में शामिल करना।
- क्षमता निर्माण और वैश्विक दक्षिण के प्रथम प्रत्युत्तरदाता के रूप में उभरना :- साझेदार देशों को आर्थिक चुनौतियों को कम करने और संकटों पर काबू पाने में सहायता के लिए वित्तीय, बजटीय और मानवीय सहायता प्रदान करना। उदाहरण के लिए भारत-संयुक्त राष्ट्र क्षमता निर्माण पहल, कोविड-19 के दौरान वैक्सीन मैत्री पहल।
- लोकतंत्र और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर वैकल्पिक तंत्र: जैसे पंचशील, गुजराल सिद्धांत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सिद्धांत पर आधारित।

वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व करने में भारत के लिए चुनौतियाँ

- कूटनीतिक चुनौती: वैश्विक दक्षिण का प्रतिनिधित्व करने का प्रयास करते हुए अमेरिका, रूस जैसी शक्तियों के साथ रणनीतिक साझेदारी को संतुलित करना कूटनीतिक रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसके अलावा, इससे इसकी विश्वसनीयता भी कम हो सकती है, क्योंकि इसे पारंपरिक गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सिद्धांतों से दूर जाने के रूप में देखा जा सकता है।
- सीमित व्यापक राष्ट्रीय शक्ति: भारत की सीमित राष्ट्रीय शक्ति और खराब विनिर्माण उद्योग, साथ ही कम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नवाचार और श्रम गुणवत्ता, वैश्विक दक्षिण की जटिलताओं का समाधान करने में चुनौतियां पेश करते हैं।
- चीन के साथ प्रतिस्पर्धा: विकास वित्त, बुनियादी ढांचे, व्यापार, परियोजनाओं की डिलीवरी आदि में चीन की प्रतिस्पर्धा और हस्तक्षेप, जैसे बीआरआई, चेक बुक कूटनीति।
- ऊर्जा परिवर्तन से जुड़ी समस्या: भारत को जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता और अपनी जलवायु प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में चुनौतियों के लिए आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। उदाहरण के लिए पश्चिमी देशों ने भारत की आलोचना की, जब उसने COP 26 में कोयले को "चरणबद्ध तरीके से समाप्त" करने की प्रतिबद्धता का विरोध किया।

निष्कर्ष

ग्लोबल साउथ के देशों में सीमित राष्ट्रीय शक्ति, गरीबी, जनसंख्या वृद्धि, आय की असमानता, संसाधनों के वितरण की असमानता, कठिन व निम्न जीवन की परिस्थितियां, अशिक्षा, विभिन्न प्रकार की अन्य समस्याएं विद्यमान है जो कि उसे ग्लोबल नॉर्थ के देशों से अलग प्रदर्शित करती है। स्वतंत्रता के बाद से ही ग्लोबल साउथ में भारत की विदेश नीति की एक अलग एवं एक प्रमुख विशेषता रही है जो कि उसे संपूर्ण ग्लोबल साउथ में एक अलग देश के रूप में पहचान दिलाती है । वर्तमान समय में भारत ने ग्लोबल साउथ के देशों में एक अग्रणी के रूप में अपने आप को स्थापित कर विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उसने ग्लोबल साउथ का सफल नेतृत्व भी किया है ।

भारत के सामने प्रमुख चुनौतियां विभिन्न ग्लोबल साउथ संगठनों के बीच सहयोग सुनिश्चित करना तथा संपूर्ण ग्लोबल साउथ देशों के बीच इस पर विश्वास बनाए रखना है। स्वयं को मजबूत करने के लिए भारत को ग्लोबल नॉर्थ की प्रमुख शक्तियों के साथ सहयोग करना होगा और ग्लोबल साउथ के नेतृत्व के लिए उनसे प्रतिस्पर्धा करनी होगी।

REFERENCES

1. https://www.india.gov.in/topics/foreign-affairs
2. https://www.mea.gov.in/distinguished-lectures-detail.htm?833
3. https://en.wikipedia.org/wiki/Foreign_relations_of_India
4. https://www.thehindu.com/opinion/editorial/%E2%80%8B-this-time-for-africa-the-hindu-editorial-on-india-africa-and-the-global-south/article68882714.ece
5. Amb. Surendra Kumar (Author) India and the Global South: Prospects and Challenges Hardcover – 25 February 2024
6. Amb. Surendra Kumar (Author) India's Foreign Policy in the Post-Covid World: International Relations through the Eyes of Indian Diplomats Hardcover – 19 November 2021
7. एल्डेन, सी. और विएरा, एम.ए. (2005) 'दक्षिण की नई कूटनीतिः दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, भारत और त्रिपक्षीयता', थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली, खंड 26, संख्या 7,.

8. बावा, यू.एस. (2007) वैश्विक परिवर्तन के लिए नई शक्तियां? उभरते विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका, फ्रेडरिक एबर्ट स्टिफ्टंग ब्रीफिंग पेपर।

9. संघ की बाहरी नीतियों के लिए महानिदेशालय (2012) विश्व में ब्रिक्स की भूमिका विकासशील विश्व, नीति विभाग, यूरोपीय संघ।

10. भारतीय आर्थिक सर्वेक्षण (2011-2012) भारत और वैश्विक अर्थव्यवस्था, पृ.337-357 [ऑनलाइन] http://indiabudget.nic.in/es2011-12/ echap-14. ।

11. लैड, पी. (2010) बिटवीन ए रॉक एंड ए हार्ड प्लेसः एलडीसीज़ इन ए जी-20 वर्ल्ड, पॉवर्टी इन फोकस, इंटरनेशनल पॉलिसी सेंटर फॉर इंक्लूसिव ग्रोथ (आईपीसी- आईजी) का प्रकाशन।

12. मोराइस डे साए सिल्वा, एम. (2010) हम यहाँ कैसे पहुँचे? दक्षिण-दक्षिण सहयोग के मार्ग, गरीबी पर ध्यान, समावेशी विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय नीति केंद्र (आईपीसी-आईजी) का प्रकाशन।

13. राणा, के. एस. (2007) 'आर्थिक कूटनीतिः विकासशील देशों का अनुभव', बेने, एन. और वूलकॉक, एस. (सं.): नई आर्थिक कूटनीतिः अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में निर्णय लेना और बातचीत, दूसरा संस्करण, पृ. 201-220, एशगेट, लंदन।

14. राणा, के. एस. (2011) 21वीं सदी की कूटनीति एक प्रैक्टिशनर गाइड, द कॉन्टिनम इंटरनेशनल पब्लिशिंग ग्रुप, लंदन, न्यूयॉर्क।

15. सरन, एस. (2012) वैश्विक शासन में उभरती अर्थव्यवस्थाओं की विकसित भूमिका एक भारतीय परिप्रेक्ष्य, किंग्स इंडिया इंस्टीट्यूट, किंग्स कॉलेज लंदन।